www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हंसती-हंसाती जिन्दगी क्यों न जियें

-श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हँसती-हँसाती जिन्दगी क्यों न जिएँ

★

जिन्दगी हलके फुलके ढंग से जिये जाने के लिए मिली है । आये दिन का घटना क्रम सीधा सरल ही रहता हो, सो बात नहीं है । उसमें कितने ही ज्वार भाटे न सही, लहरों जैसे उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं । यहाँ सब कुछ सीधा सरल नहीं है । बहुत कुछ टेडा मेडा और ऊबड़ खाबड़ भी है । उससे सर्वथा बच निकलना किसी के लिए भी संभव नहीं हो सकता दिन रात की तरह अनुकूलता और प्रतिकूलता अपना-अपना रंग दिखाती रहती है । सम्पर्क क्षेत्र के व्यक्ति कभी सीधे चलते हैं कभी उलटे । शरीर कभी नरम रहता है तो कभी गरम । सफलता और असफलता, संयोग-वियोग, नफा-नुकसान जैसे न जाने कितने उतार चढ़ाव आते जाते रहते हैं । यह सहज स्वाभाविक है । यह दुनियां हमारे ही लिए नहीं बनी है और परिस्थितियों पर अपना परिपूर्ण नियन्त्रण नहीं है । सब लोग हमारी मर्जी के अनुरूप ही व्यवहार करें,यह भी संभव नही। यहाँ सब कुछ मीठा ही नहीं बहुत कुछ कड़ुआ भी है । ऐसी दशा में जूझते निपटते,सहते संजोते हुये ही दिन काटने पड़ते हैं । ऐसा होता नहीं कि अपने को जो अनुकूल--उपयुक्त लगता है, वैसा ही माहौल बना रहे । ऐसी दशा में एक ही उपाय रह जाता है कि तालमेल बिठाकर चलने जैसी स्थिति बनाई जाय । ऐसा रास्ता निकला जाय जिसमें साँप मरे न लाठी टूटे । नियति व्यवस्था के अनुरूप परिस्थितियों की उलट-पलट में भी संतुलन बना रहे । मुस्कान हाथ से जाने न पाये । धैर्य टूटे नहीं और निराशा खीज, उद्विग्नता, का शिकार न बनना पड़े ।

हलकी फुलकी जिन्दगी जीने वाले ही शान्ति से रहते और चैन संतोष के दिन काटते हैं । जीवन को एक खेल जैसा माना जाना चाहिए और उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हार जीत की बहुत परवा किये बिना विनोद मनोरंजन के लिए बहुत हुआ तो उसमें प्रवीणता पाने के लिए–मंडली में फुर्तीला अनुभव किये जाने की दृष्टि से खेला जाना चाहिए। नाटक के अभिनेता जैसा दृष्टिकोण भी सही है। कभी राजा कभी रंक बनने में पात्र को न कोई संकोच लगता है और न असमजस होता है। वह अपनी निजी हैसियत और प्रदर्शन की खोखली वास्तविकता को समझता है। इसलिए सिंहासन हार जाने और मुकुट उतर जाने पर भी चेहरे पर मलीनता नहीं आने देता। रात को चादर तानकर गहरी नींद सोता है। वैसी ही मनः स्थिति अपनी भी होनी चाहिए। दिन में क्या किया? कितना सोचा था, कितना पूरा हो सका, कल के लिये क्या जीवन क्रम निर्धारित किया है, इतना पर्यवेक्षण तो सोने के पूर्व अवश्य कर लिया जाय। परन्तु विगत की घटनाओं, दिन में किसी के अपने साथ किये गए दुर्व्यवहारके चिन्तन-बदला आदि लेने की भावना के विचार सोते समय मन पर कतईन आने दिए जावें। मन हल्का रहे। कुछ घटा भी है, इसकी छाया मात्र भी मस्तिष्क पटल पर आने न दी जाय यही सच्ची जीवन यापन शैली है। तनाव रहित मन तुरन्त निद्रा देवीका आव्हान करता है। ऐसी हल्की फुल्की जिन्दगी ही नीरोग काया की जन्म दात्री बनती है। एकान्त सेवन,गुहा-प्रवेश, गर्भकाल की स्थिति जैसी मानसिकता यदि बनायी जा सके तो कोई कारण नहीं कि आये दिन के संकटों से जूझने योग्य सामर्थ्य मनुष्य में विकसित न हो सके। मन को साधकर अनुकूल दिशा में मोड़ लेना ही सच्चे अर्थों में जिन्दगी जीना है।

बड़ी से बड़ी आशा रखें किन्तु बुरी से बुरी संभावना के लिए तैयार रहें। मनुष्य के हाथ में कर्तव्य करना भर है। यदि उसे ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ निभाया गया हो तो गर्व गौरव अनुभव किया जा सकता है। सफलता में असफलता का उत्तरदायित्व भी प्रत्यक्षतः कर्त्ता के सिर पर ही लदता है, यह नहीं समझना चाहिए के परिस्थितियों का कुछ प्रभाव होता ही नहीं। कई बार जागरुक और सुयोग्य तक चपेट में आ जाते हैं. जबकि अंधे के हाथ बटेर लगती भी देखी गयी है। हाथ के काम में पूरी तत्परता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और तन्मयता बरतें और उसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर पूरी जिम्मेदारी के साथ सम्पन्न करें इतने पर भी समय का ऊँट किस करवट बैठेगा, यह कहा नहीं जा सकता। जो अपने बस की बात नहीं,उसके लिए क्यों तो सिर पटका जाय और क्यों उछलने फुदकने का बचकाना पन प्रदर्शित किया जाय ?

अपने से बड़ों को देखकर उन जैसे वैभव की अभिलाषा जगाना भी अनुपयुक्त है। इस संसार में एक से एक बड़े पड़े हैं। किस-किस से तुलना की जाय और किस-किस की समता का मनोरथ किया जाय ? तुलना ही करनी हो तो अपनों से छोटों के साथ करनी चाहिए और अनुभव करना चाहिए कि अपने को अपेक्षाकृत कितना अधिक सौभाग्य मिला हुआ है। अपंगों, दरिद्रों, अशिक्षितों, रोगियों, असहायों की तुलना में जब अपनी स्थिति कहीं अधिक अच्छी है तो उस पर सन्तोष व्यक्त करने में क्या हर्ज है। ऐसे भी असंख्यों हो सकते हैं जो उसके लिए भी तरसते हों जो अपने हिस्से में आया है। जिसे दोनों समय भोजन मिल जाता है, अपने पैरों खड़े रहने का अवसर है उसे सन्तोष की सांस लेनी चाहिए और भगवान को हजार बार धन्यवाद देना चाहिए, कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए।

प्रगति पथ पर अग्रसर होने में हर्ज नहीं। भौतिक और आत्मिक उन्नति करते रहने से साहस बढ़ता है और सम्मान मिलता है। सुविधा साधन भी अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं। फिर भी स्मरण रखने योग्य तथ्य यह है कि वैभव का संग्रह न किया जाय और न उसे कुटुम्बी जनों के लिए छोड़ मरने की बात सोची जाय। सदुपयोग से हाथ रोककर फिर कभी के लिए जमा करते रहने पर वह संग्रह अनेकानेक दुर्व्यसनों और विग्रहों का सृजन करता है। मुफ्त का माल भले ही उत्तराधिकारियों को ही क्यों न मिले। दुष्परिणाम ही उत्पन्न करेगा। हराम का माल किसी को भी नहीं पचता, कच्चे पारे की तरह बदन फोड़कर निकलता है। अच्छा हो उससे उत्तराधिकारियों को बचायें और परिजनों को स्वावलम्बी सुसंस्कारी बनने भर का कर्तव्य पालें। ऐसा मन और इतना निर्धारण बन पड़े तो समझना चाहिए उद्विग्नता उत्पन्न करने वाला आधा जंजाल कट गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न अशुभ सोचें न दोष ढूँढें, न अन्धकारमें भटकें। उज्ज्वल भविष्य की आशा रखें। प्रकाश की ओर चलें। छाया के पीछे न दौड़ें। प्रकाश की दिशा में चलने वाले के पीछे-पीछे छाया चलती है। जबकि छाया पकड़ने के लिए दौड़ने वाले के हाथ थकान और निराशा ही लगती है। महानता प्रकाश है और अमीरी छाया। श्रेष्ठता, शालीनता और उदारता अपनाने वाले सामान्य स्तर का निर्वाह करते हुये भी गौरवास्पद बनते हैं जबकि सम्पदा के पीछे उतावले लोग उन सब श्रेय सौभाग्यों से वंचित ही बने रहते हैं जो उन जैसी स्थिति, योग्यता वालों को सहज ही मिल सकते थे। व्यक्तित्व को गरिमा सम्पन्न बना सकना ऐसा ही है जिस पर कुबेर की अमीरी न्यौछावर की जा सकती है। गुण, कर्म, स्वभाव की वरिष्ठता सम्पादित करने के लिए किया गया पुरुषार्थ हाथों हाथ फल देता है जबकि सोने की लंका खड़ी करने की इच्छा करने वाले सिवाय हैरान होने और हैरान करने के कुछ पाते नहीं। महत्वाकांक्षाएँ महामानवों जैसे उच्च स्तर तक पहुँचने की तो ठीक हैं पर जब वह तृष्णा, वासना और अहंता की दृष्टि से इन्द्रासन पाने के लिए मचलती हैं तो समझना चाहिए, सर्वनाश के दिन निकट आ गये। ललक लिप्सा के लिए आतुर व्याकुल कमाते कम और गंवाते अधिक हैं।

औसत भारतीय स्तर का निर्वाह जिन्हें पर्याप्त लगता है वे ईश्वर चन्द्र विद्या सागर की तरह न्यूनतम निर्वाह में काम चलाते और अपनी कमाई का अधिकांश भाग परमार्थ में लगाते रहते हैं। ऐसों को यह पश्चाताप करते नहीं देखा गया कि वे गरीबीमें दिन गुजारते हैं। बुरी तो कंगाली है जो आलसियों या अपव्यय विलासताओं पर ललक लिप्सा बन कर छायी रहती है। गरीबी ब्राह्मण की शान है। गांधी जी प्राचीन काल के सन्तों की तरह अपरिग्रही जीवन जीते थे। जनक हल चलाकर पेट भरते थे। इससे उनकी गरिमा घटी नहीं। भर्त्सना के भाजन तो लालची होते हैं जो पेट भरा रहने पर भी अधिक की रट लगाये रहते हैं और उसे बटोरने के लिए अनीति अपनाने का कुकर्म करने तक से नहीं चूकते।

इस दुनिया में कुरुपता तो है पर इतनी नहीं जो सौन्दर्य से अधिक अनुपात

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में तोली जा सके । इस दुनिया में अन्धेरा भी है, अभाव और अनाचार भी किन्तु वे इतने नहीं जो प्रकाश के वैभव की शालीनता से भी भारी सिद्ध हो सकें । भ्रष्टों और दुष्टों की कमी नहीं, किन्तु यह धरती सज्जनता और उदारता के सहारे ही टिकी हुई है । हम निकृष्ट पर ही दृष्टि जमाकर उद्यान में भी पाये जाने वाले गुबरीले का उदाहरण क्यों बनें ? फूलों पर मंडराने वाले और भाग्य की सराहना करने वाले भौंरों जैसा दृष्टिकोण क्यों न अपनायें । जब श्रेष्ठता से सम्बन्ध जोड़ते हैं तो वह खिचती हुई अपने पास चली आती है । जिन्हें निकृष्टता के बीच रहना, वैसा ही सोचना और उन्हीं में जुड़ना सुहाता है वे ही अपने को नरक से घिरा देखते हैं । चिन्तन उलट जाने पर बाल्मीकि बिल्व, मंगल, अंगुलिमाल, अजामिल जैसों का काया कल्प हो गया था । फिर कोई कारण नहीं जो अपने भाग्यका नया निर्माणअपने हाथोंन करें।

स्वर्ग और नरक मनुष्य के दांये बांये हाथों में विधाता ने सुनियोजित ढंग से संजोकर रखे हुये हैं । मनुष्य चाहे जिस मुठ्ठी को खोलकर अपने लिए अभीष्ट परिस्थितियों का सृजन कर सकता है । इस सम्बन्ध में अड़चन एक ही है कि निषेधात्मक चिन्तन के साथ जुड़े हुए पतन पराभव एवं विधेयात्मक विचारणाओं के साथ अविछिन्न रूप से जोड़े गये उत्थान को अलग नहीं किया जा सकता । यह दोनों युग्म जुड़वाँ भाइयों की तरह उत्पन्न होते हैं और अपने साथी को लेकर ही गतिशील रहते हैं ।

कहते हैं कि विधाता मनुष्य का भाग्य ललाट के ऊपर लिखता है । यह सत्य भी है और तथ्य भी । जो जैसा सोचेगा वह वैसा बनेगा । मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस उक्ति की संगति इसी प्रकार बैठती है कि क्रिया का शुभारम्भ चिन्तन क्षेत्र से होता है । हाथ पैर तो बहुत बाद में भीतर की खिचड़ी पक कर तैयार हो जाने के बाद अपना काम प्रारम्भ करते हैं । कर्त्ता कौन ? इस प्रश्न का उत्तर एक शब्द में देना हो तो कहना चाहिए कि मस्तिष्क । वही अपनी गतिविधियों के-विचारणाओं के सहारे वर्तमान का ही नहीं, भविष्य का भी निर्माण करता है ।

जो घटिया सोचते रहे वे घटिया बनकर रहे । जिनने उद्धत विचारा, वे पतन पराभव के गर्त में जा गिरे । जिनने ऊँचा सोचा,ऊँचा निर्णय किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊँचे प्रयासों में हाथ डाला, वे ही ऊँचे उठे और महामानवों के लिए निर्धारित महानता के उच्च शिखर पर जा विराजे। अभिवंदनीय और अनुकरणीय बने। कृतकृत्य होकर रहे। यह मनुष्य का अपना रुझान और चुनाव है कि चौराहे से फटने वाली श्रेष्ठता और निकृष्टता के दो रास्तों में से किसे चुने और किस पर कितनी तत्परता के साथ कदम बढ़ाये।

चासनी में पर फँसा कर बेमौत मरने वाली मक्खी की दुर्गति अनेकों ने देखी और सुनी है। इतने पर भी यह भुला दिया जाता है कि लिप्सा लालसा की कभी शांत न हो सकने वाली आग में क्यों कूदा जाय। किनारे पर बैठकर थोड़ा-थोड़ा चखने वाली मक्खी नफे में रहती है। पेट भी भर लेती है और जोखिम से भी बची रहती है। हलकी फुलकी जिन्दगी इसी को कहते हैं। अमीरों की ललक यदि हावी न हो और औसत नागरिकों जैसा निर्वाह पर्याप्त लगे तो फिर ऊँचा सोचने और ऊँचा करनेका अवसर भी मिल सकता है। समझदारी इसी को कहते हैं कि चिन्तन की श्रेष्ठता अपनाने के लिए तानाबाना बुनने दिया जाय। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए भगवान से प्रार्थना करनी पड़ती है—

"साईं इतना दीजिए, जिसमें कुटुम्ब समाय।
आप नहीं भूखा रहै, साधु न भूखा जाय॥"

दूरदर्शी कामना में उग अंकुश को सजग पाया जा सकता है जो भौतिक लिप्साओं की मर्यादाओं में रहने के लिए प्रतिबन्ध लगाता है। निर्वाह भर में संतोष करता है। और बचा को, द्वार पर खड़े साधु को देने के लिए दबाव डालता है। इस अनुशासन में रहने वाले न केवल हंसती-हंसाती जिन्दगी जी सकते हैं। वरन् अपने वैभव, उपार्जन, पराक्रम को मिलजुल कर बाँट खाने की उदारता भी चरितार्थ कर सकते हैं। इसके विपरीत जिनकी लिप्सा समुद्र जितनी गहरी है और जिन्हें उसे पाटने की उतावली मची है, उनके लिए अनीति पर उतारू और कुकर्मरत रहने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। निष्ठुरता अपनाये बिना कोई इतना नहीं कमा-बचा सकता जिसके सहारे अमीरों जैसे ठाठ बाट बनाकर रहा जा सके। अपव्यय की फुलझड़ी जलाकर विलास का तमाशा देखने वाले सिर्फ वे ही हो सकते हैं जिन्हें अनुपयुक्त संग्रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की उद्धत अपव्यय की लगन लगी हो यह अर्द्धविक्षिप्तों जैसी गहरी छानने वालों गुलाबी पीने वालों जैसी मनःस्थिति है जिसमें संग्रह और विलास के लिए अनुपयुक्त उपार्जन के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं। ऐसी स्थिति से तो समस्याएँ और आ खड़ी होती हैं। व्यक्ति स्वयं तो अतः में त्रास पाता ही है, अन्यों का शोषण कर भर्त्सना का पात्र भी बनता है। यह अदूरदर्शिता यदि समय रहते उलट दी जाय और समझदारी से जीने की बात मन में जड़ें जमा सके तो समझना चाहिए, मनुष्य को नया जन्म मिल गया। अच्छा हो, ऐसी समझदारी जल्दी ही साथ दे और समय रहते इस प्रचलन प्रवाह में बहने न देने के लिए रोकथाम लगाये, खींच घसीट कर किनारे पर लगाये। जिसे ऐसा सुयोग मिलेगा उसी के लिए यह संभव होगा कि हंसती हंसाती जिन्दगी जिये और हिल मिलकर सुख चैन के दिन बिताये।

साथ ही अपनी मनमर्जी के अनुसार अपनी गति–विधियों का–आदतों का निर्माण करे। अपने जैसा ही सोचें यह कल्पना आदि से अंत तक गलत है। इस संसार में हर किसी की आकृति अलग है। किसी का चेहरा किसी से नहीं मिलता। ठीक इसी प्रकार प्रकृति में भी अन्तर रहता है। जन्म जन्मान्तरोंके संचित संस्कारों और वर्तमानमें अपनाये गये अनेकानेक प्रभावों के कारण हर मनुष्य का चिन्तन और स्वभाव भिन्न-भिन्न है। इसे इतनी जल्दी नहीं बदला जा सकता कि वह चुटकी बजाते अपना सब कुछ छोड़कर हमारा आज्ञानुवर्ती बने और वही करे जो हम कहें। मशीनों को पशुओं को इच्छानुरुप चलाया जा सकता है किन्तु मनुष्य के सम्बन्ध में वैसा नहीं सोचा जाना चाहिए। कुटुम्बियों के सम्बन्ध में भी मौलिक भिन्नता को मान्यता देते हुये तर्क, तथ्य, प्रमाण प्रस्तुत करते हुये स्नेह सद्भाव के सहारे किसी को औचित्य अपनाने की बात कहने में तो हर्ज नहीं, फिर भी हर किसी को स्वतन्त्र निर्णय देने की गुंजायश तो रखनी ही होगी। जिसके साथ जितनी पटरी बैठे उतना तालमेल बिठाकर चलना ही बुद्धिमत्ता है जिसे अपनाने वाले हर परिस्थिति में हँसती-हँसाती जिन्दगी जीते देखे गये हैं। ★

क्र० १३/प्र०–युग निर्माण योजना,मु०–युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org